देववाणी संस्कृत

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

- भूमिका ६

- ग्रंथके ज्ञानसंबंधी सूक्ष्म-विश्वके 'एक विद्वान'द्वारा भाष्य ७

- 'सूक्ष्म' शब्दके संदर्भमें कुछ संज्ञाओंका अर्थ ८

- ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधिकाओंका परिचय ९

- कृतज्ञता १०

- संस्कृत भाषानुरूप हिंदी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन ! ११

१. संस्कृत भाषाकी निर्मिति १२

* 'संस्कृत' - ईश्वरनिर्मित भाषा १२
* द्वापरयुगतक संस्कृत ही विश्वकी भाषा थी ! १३

२. संस्कृत भाषाकी विशेषताएं १४

* व्याकरणकी दृष्टिसे संस्कृत भाषाका वैज्ञानिक आधार विश्वकी किसी भी भाषामें न होना १४
* सहस्त्रों वर्षोंसे वेदमंत्रोंका उच्चारण यथावत रहना २२
* कभी भी भ्रष्ट न होनेवाली संस्कृत भाषा ! २३
* वाक्यमें शब्द आगे-पीछे करनेपर भी अर्थमें परिवर्तन न होना २८
* संस्कृत श्लोकमेंसे एक अक्षर भी हट जाए, तो श्लोकका अर्थ परिवर्तित होकर विपरीतार्थी होनेकी आशंका २८
* देववाणी (संस्कृत) सभी भाषाओंमें दिव्य, प्रमुख एवं मधुर भाषा ३०

३. संस्कृत भाषाका महत्त्व ५७

* संस्कृत ग्रंथ अर्थात भारतीयता एवं हिंदुत्व ! ५७
* संस्कृतके नेतृत्वमें भारतीय भाषाओंने राष्ट्रीय एकता दृढ एवं वर्धमान की ! ५७
* विश्वकी सर्व भाषाएं संस्कृतजन्य होनेके कारण संस्कृतका आधार

लेकर कोई भी भाषा सीखना अधिक सरल होना ! ५७
* जहां संस्कृतका अध्ययन होता है, वहां संस्कृति निवास करती है ५७
* संस्कृतके कारण 'अमेरिकन चोरों'के विरुद्ध हल्दीके 'पेटंट' की लडाई जीती जा सकी ! ५९
* संगणकमें शुद्ध वर्णमाला अपरिहार्य होनेके कारण संस्कृत (देवनागरी) लिपिका प्रयोग सुविधाजनक होना ५९
४. संस्कृत भाषाके लाभ **६०**
* संस्कृत बोलनेसे मस्तिष्कके रोग न होना ६०
* संस्कृतसे मानसिक क्षमता बढना तथा वाणीशुद्धि होना ६०
५. संस्कृत भाषाको होनेवाले विभिन्न प्रकारके विरोध ६०
* मुसलमान एवं अंग्रेजोंद्वारा संस्कृतके विनाशका आरंभ करना ६०
* संस्कृत अन्य यूरोपीय भाषाओं समान ही एक भाषा है, ऐसा प्रतिपादन करनेवाले अहंकारी विदेशी ! ६१
* संस्कृतका तिरस्कार ब्राह्मणद्वेषके कारण ६६
६. संस्कृतकी वर्तमान स्थिति **६७**
* शिक्षा विभागद्वारा किया गया संस्कृत भाषाका शोषण ६९
* कहां संस्कृतका महत्त्व जानकर उसका लाभ लेनेवाले विदेशी, और कहां भारतके संस्कृतद्वेषी राज्यकर्ता ? ७४
७. संस्कृतका संवर्धन एवं संस्कृतकी सुरक्षाके उपाय **७६**
* संस्कृत ग्रंथोंका अनुवाद करते समय सनातन धर्म एवं संस्कृति के मूल रूपपर आघात न हो ! ७८
* संस्कृत भाषा मृत है, ऐसा कहना मूर्खता है ! ८४
* संस्कृत भाषामें लिखे अधिकोष विकर्ष (डिमांड ड्राफ्ट) को अस्वीकार करनेवाले आंध्र अधिकोषको (बैंकको) ग्राहक मंचका कडा उत्तर ! ८७
८. संस्कृत भाषाके संदर्भमें भारतीय साधकोंकी अनुभूतियां **८९**
९. संस्कृतके संदर्भमें विदेशी साधकोंकी अनुभूतियां **९६**
१०. अनुभूतियोंका विवरण **९९**

भूमिका

जिस देववाणी संस्कृतने मानवको ईश्वरप्राप्तिका मार्ग दिखाया, उस देववाणीको ही कृतघ्न मानव, विशेषतः स्वतंत्रताके उपरांत सर्वदलीय राज्यकर्ता नष्ट करने हेतु प्रयत्नशील हैं । सामान्य जनता इसकी गंभीरताको समझ नहीं पा रही है । उसे समझानेके लिए प्रस्तुत ग्रंथमें देववाणीकी विशेषता एवं महत्ता प्रतिपादित की गई है । देववाणीकी विशेषता एवं महत्ता समझनेके उपरांत जनता इसकी वर्तमान दुर्दशा देख दुःखी होगी एवं क्रोधित भी । ऐसेमें जब जनता उस स्थितिके कारणोंको ढूंढेगी, तब उसके ध्यानमें आएगा कि देववाणीका विरोध करनेवाले सर्वदलीय राज्यकर्ता ही इस दुर्दशाके उत्तरदायी हैं और तब जनता भाषाक्रांतिके लिए कटिबद्ध होगी । अतएव जनताको आवश्यक उपाय ज्ञात होना आवश्यक है । इन सर्व विषयोंकी जानकारी इस ग्रंथमें दी गई है ।

यदि हम ये चाहते हैं कि भावी पीढी हमपर यह आरोप न कर सके कि संपूर्ण मानवजातिके कल्याण हेतु कार्यरत ईश्वरप्रदत्त संस्कृत भाषाको हमने नष्ट होनेके कगारपर पहुंचा दिया है, तो हममेंसे प्रत्येकको पूरे समाजमें संस्कृतका प्रसार करना अपना प्रथम कर्तव्य समझना चाहिए ।

अंग्रेजी जैसी आसुरी तथा अन्य अभारतीय भाषाएं, मानवको मोक्षप्राप्तिका मार्ग दिखानेवाली संस्कृतभाषा नष्ट करनेके उद्देश्यसे ही निर्मित की गई हैं ।

इस ग्रंथको पढकर मानव, विशेषकर हिंदु, देववाणीका महत्त्व समझें एवं कमसे कम अपने लाभके लिए ही, संस्कृतके पुनरुत्थानका संकल्प लें, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !

- संकनलकर्ता